ResearchNext International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026 ISSN (O)- 3107-9725

Email id: editor@researchnextjournal.com Website- www.researchnextjournal.com

# नीतीश कुमार के गठबंधन शासन के तहत राजनीतिक स्थिरता और शासन के परिणाम (2005–2025)

## चंद्रशेखर प्रसाद सिंह

*शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार*

## प्रो० डॉ० रंजीत कुमार

*शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार*

**Article Info:** *(Recieved- 02/01/2026, Accept- 14/02/2026, Published- 20/03/2026)*

DOI- 10.64127/rnimj.2026v2i10015

**सार**

2005 और 2025 के बीच की अवधि बिहार के राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसकी विशेषता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लंबे समय तक शासन और गठबंधन की राजनीति का एक विशिष्ट पैटर्न है। यह पत्र नीतीश कुमार के गठबंधन शासन के दौरान राजनीतिक स्थिरता और शासन के परिणामों के बीच संबंधों की आलोचनात्मक जांच करता है। यह विश्लेषण करता है कि गठबंधन की व्यवस्थाओं – मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ और बीच–बीच में महागठबंधन के साथ – ने बिहार में प्रशासनिक निरंतरता, नीतिगत प्राथमिकताओं, संस्थागत सुधारों और विकास की दिशाओं को कैसे आकार दिया। माध्यमिक स्रोतों, चुनावी आंकड़ों, नीतिगत दस्तावेजों और विद्वानों के विश्लेषणों के आधार पर, यह पत्र तर्क देता है कि नीतीश कुमार की गठबंधन सरकारों ने बिहार के 2005 से पहले के युग की तुलना में सापेक्ष राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित की, जिससे कानून और व्यवस्था, बुनियादी ढांचे के विकास, सामाजिक कल्याण वितरण और शासन तंत्र में सुधार संभव हुआ। हालांकि, यह अध्ययन आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और लोकतांत्रिक जवाबदेही से संबंधित संरचनात्मक सीमाओं, शासन की थकान और उभरती चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है। पत्र का निष्कर्ष है कि नीतीश कुमार के तहत गठबंधन की स्थिरता ने प्रशासनिक मजबूती में योगदान दिया, लेकिन शासन के परिणाम असमान रहे, जो गठबंधन की मजबूरियों और दीर्घकालिक विकासात्मक परिवर्तन के बीच अंतर्निहित तनाव को दर्शाता है।

**मुख्य शब्दः** गठबंधन की राजनीति, नीतीश कुमार, बिहार, राजनीतिक स्थिरता, शासन के परिणाम, क्षेत्रीय नेतृत्व, भारतीय संघवाद।

## 1. परिचय

लोकतांत्रिक प्रणालियों में राजनीतिक स्थिरता और शासन की प्रभावशीलता आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं, विशेष रूप से विकासशील समाजों में जहां संस्थागत क्षमता और सामाजिक विविधता लगातार चुनौतियां पेश करती हैं। भारत की संघीय संरचना में, राज्य सरकारें विकासात्मक परिणामों, सामाजिक न्याय और राजनीतिक व्यवस्था को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बिहार, जिसे ऐतिहासिक रूप से भारत के सबसे राजनीतिक रूप से अस्थिर और प्रशासनिक रूप से कमजोर राज्यों में से एक माना जाता है, ने 2005 के बाद

नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री बनने के साथ एक उल्लेखनीय परिवर्तन देखा।

2005 से 2025 तक, नीतीश कुमार बिहार की राजनीति में केंद्रीय व्यक्ति के रूप में उभरे, जिन्होंने विभिन्न वैचारिक गठबंधनों के साथ कई गठबंधन सरकारों का नेतृत्व किया। उनका कार्यकाल अस्थिर सरकारों और लगातार प्रशासनिक विफलताओं के युग से एक बदलाव के साथ मेल खाता है, जो 1990 के दशक और 2000 के दशक की शुरुआत में बिहार की राजनीति की विशेषता थी। गठबंधन के पुनर्गठन के बावजूद नेतृत्व की निरंतरता, यह जांचने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है कि गठबंधन शासन के तहत राजनीतिक स्थिरता शासन के परिणामों को कैसे प्रभावित करती है। राजनीतिक नेतृत्व का स्वरूप और गवर्निंग गठबंधन की संरचना शासन की गुणवत्ता और लोकतांत्रिक संस्थानों की स्थिरता को बहुत ज़्यादा प्रभावित करते हैं। भारत जैसे बहुलवादी समाजों में, जहाँ सामाजिक विविधता, क्षेत्रीय असमानताएँ और संघीय व्यवस्थाएँ एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं, गठबंधन की राजनीति न केवल एक राजनीतिक ज़रूरत बन गई है, बल्कि शासन की एक मुख्य विशेषता भी बन गई है। राज्य स्तर पर, गठबंधन सरकारों ने नीतिगत नतीजों, प्रशासनिक दक्षता और राजनीतिक स्थिरता को तेज़ी से आकार दिया है। बिहार, जो भारत के सबसे ज़्यादा आबादी वाले और राजनीतिक रूप से जटिल राज्यों में से एक है, गठबंधन की राजनीति, राजनीतिक स्थिरता और शासन के नतीजों के बीच तालमेल की जाँच करने के लिए एक खास तौर पर मज़बूत उदाहरण पेश करता है। 2005 और 2025 के बीच, बिहार ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में नेतृत्व की निरंतरता का एक अभूतपूर्व दौर देखा, जिनका राजनीतिक करियर गठबंधन शासन से गहराई से जुड़ा हुआ है।[1]

ऐतिहासिक रूप से, बिहार को राजनीतिक अस्थिरता और शासन की विफलता के प्रतीक के रूप में देखा जाता था। आज़ादी के बाद कई दशकों तक, राज्य को बार–बार सरकार बदलने, गुटबाजी, कमजोर प्रशासनिक क्षमता और सीमित आर्थिक विकास जैसी समस्याओं से जूझना पड़ा। 1990 के दशक में स्थिति और खराब हो गई, जब शासन व्यवस्था पहचान की राजनीति, खासकर जाति–आधारित लामबंदी से गहराई से जुड़ गई। हालांकि इस दौर में हाशिए पर पड़े सामाजिक समूहों का राजनीतिक सशक्तिकरण हुआ, लेकिन यह बिगड़ती कानून–व्यवस्था, घटती सार्वजनिक सेवाओं और संस्थागत विश्वसनीयता में गिरावट का भी दौर था। नतीजतन, इस चरण में बिहार के शासन मॉडल को अक्सर इस बात के उदाहरण के तौर पर पेश किया जाता था कि राजनीतिक अस्थिरता कैसे विकास और लोकतांत्रिक जवाबदेही को कमजोर कर सकती है।[2]

साल 2005 ने इस रास्ते से एक निर्णायक बदलाव का संकेत दिया। बिहार विधानसभा चुनावों के बाद नीतीश कुमार का मुख्यमंत्री के रूप में उभरना एक नए राजनीतिक दौर का प्रतीक था, जिसमें शासन, विकास और संस्थागत सुधारों पर ज़ोर दिया गया। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के साथ गठबंधन में जनता दल (यूनाइटेड) (जेडी(यू)) का नेतृत्व करते हुए, नीतीश कुमार ने खुद को कानून का राज बहाल करने, प्रशासनिक संस्थानों को मजबूत करने और राजनीतिक विमर्श को पहचान से विकास की ओर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध नेता के रूप में पेश किया। सालों की अनिश्चितता के बाद एक स्थिर गठबंधन सरकार के गठन से व्यापक उम्मीदें जगीं कि बिहार राजनीतिक सामान्यीकरण और शासन के नवीनीकरण के दौर में प्रवेश कर रहा है।

नीतीश कुमार के कार्यकाल को जो बात खास बनाती है, वह सिर्फ़ इसकी अवधि नहीं है, बल्कि वह तरीका है जिससे बार–बार गठबंधन में बदलाव के बावजूद राजनीतिक स्थिरता बनाए रखी गई। 2005 से 2025 तक, नीतीश कुमार ने कई गठबंधन सरकारों का नेतृत्व किया, मुख्य रूप से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के तहत, लेकिन कुछ समय के लिए महागठबंधन के तहत भी। ये बदलाव बदलते राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों, चुनावी गणनाओं और वैचारिक मतभेदों से प्रभावित थे। फिर भी, इन बदलावों के बावजूद, नीतीश कुमार बिहार की राजनीतिक व्यवस्था के केंद्रीय व्यक्ति बने रहे, जो गठबंधन–प्रधान माहौल में नेतृत्व की निरंतरता का एक असामान्य स्तर दिखाता है। यह निरंतरता बिहार को कई अन्य भारतीय राज्यों से अलग करती है, जहां गठबंधन की अस्थिरता के कारण अक्सर नेतृत्व और नीतिगत दिशा में बार–बार बदलाव हुए हैं।[3]

गठबंधन की राजनीति और राजनीतिक स्थिरता के बीच संबंध राजनीतिक विज्ञान साहित्य में व्यापक बहस का विषय है। पारंपरिक सिद्धांत अक्सर गठबंधन सरकारों को अस्थिरता, नीतिगत पंगुता और कमजोर जवाबदेही से जोड़ते हैं, खासकर विकासशील लोकतंत्रों में। गठबंधन को अक्सर नाजुक व्यवस्था के रूप में देखा जाता है जो आंतरिक संघर्ष, अवसरवादिता और टूटने की संभावना रखती है। हालांकि, नीतीश कुमार के तहत बिहार का अनुभव इस पारंपरिक धारणा को चुनौती देता है। गठबंधन में काम करने के बावजूद, राज्य में 2005–2025 की

ज़्यादातर अवधि में अपेक्षाकृत स्थिर शासन, पूरे विधायी कार्यकाल का पूरा होना और लगातार प्रशासनिक कामकाज देखने को मिला। यह इस बारे में महत्वपूर्ण सवाल उठाता है कि किन परिस्थितियों में गठबंधन सरकारें राजनीतिक स्थिरता को कमज़ोर करने के बजाय उसमें योगदान दे सकती हैं।

शासन के नतीजों का सवाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है। राजनीतिक स्थिरता, हालांकि वांछनीय है, लेकिन यह अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है। इसका महत्व प्रभावी शासन, दीर्घकालिक योजना और नीति कार्यान्वयन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने की इसकी क्षमता में निहित है। बिहार में, 2005 के बाद की अवधि में कुछ शासन संकेतकों में उल्लेखनीय सुधार देखा गया, विशेष रूप से कानून और व्यवस्था, बुनियादी ढाँचे के विकास और बुनियादी सेवाओं की डिलीवरी में। सड़कें, पुल, स्कूल और स्वास्थ्य सुविधाएँ राज्य में पहले कभी न देखी गई गति से फैलीं। नौकरशाही जवाबदेही और दक्षता में सुधार के उद्देश्य से प्रशासनिक सुधार शुरू किए गए, और महिलाओं, पिछड़े वर्गों और ग्रामीण आबादी को लक्षित करने वाली कल्याणकारी योजनाओं को प्रमुखता मिली। इन घटनाक्रमों ने इस धारणा में योगदान दिया कि बिहार धीरे–धीरे लेकिन सार्थक परिवर्तन से गुज़र रहा है।[4]

साथ ही, नीतीश कुमार की गठबंधन सरकारों के शासन रिकॉर्ड की आलोचना भी हुई है। विद्वानों और टिप्पणीकारों ने बताया है कि बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक व्यवस्था में सुधार के बावजूद, बिहार औद्योगिक विकास, रोज़गार सृजन और प्रति व्यक्ति आय के मामले में कई अन्य राज्यों से पीछे रहा। दूसरे राज्यों में मज़दूरों का बड़े पैमाने पर पलायन बिहार की अर्थव्यवस्था की एक लगातार बनी रहने वाली विशेषता रही, जो संरचनात्मक कमज़ोरियों को दर्शाती है, जिन्हें केवल शासन सुधारों से आसानी से हल नहीं किया जा सकता था। इसके अलावा, बार–बार गठबंधन में बदलाव से वैचारिक स्थिरता, लोकतांत्रिक जवाबदेही और सत्ता के निजीकरण के बारे में चिंताएँ बढ़ीं। आलोचकों का तर्क है कि लंबे समय तक नेतृत्व, यहाँ तक कि स्थिर गठबंधनों के तहत भी, शासन में थकान, नवाचार में कमी और उभरती चुनौतियों के प्रति कम प्रतिक्रिया का कारण बन सकता है।[5]

इस प्रकार 2005 से 2025 तक की अवधि एक विरोधाभासी तस्वीर पेश करती है। एक ओर, बिहार ने गठबंधन सरकारों के तहत राजनीतिक स्थिरता का एक असामान्य स्तर अनुभव किया, जिसका नेतृत्व एक ही प्रमुख नेता ने किया। दूसरी ओर, शासन के परिणाम असमान रहे, जो उपलब्धियों और स्थायी सीमाओं दोनों को दर्शाते हैं। यह विरोधाभास नीतीश कुमार की गठबंधन सरकारों के अध्ययन को भारतीय संघवाद और क्षेत्रीय राजनीति की व्यापक गतिशीलता को समझने के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक बनाता है। यह गठबंधन शासन, नेतृत्व की लंबी अवधि और राजनीतिक स्थिरता और विकास के बीच संबंध के बारे में मान्यताओं की फिर से जाँच करने के लिए प्रेरित करता है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से, बिहार का मामला गठबंधन व्यवस्था को स्थिर करने में नेतृत्व की भूमिका के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। नीतीश कुमार की राजनीतिक रणनीति ने व्यावहारिकता को प्रशासनिक विश्वसनीयता पर ज़ोर देने के साथ जोड़ा। खुद को विकास–उन्मुख और भ्रष्टाचार–विरोधी नेता के रूप में पेश करके, वह विभिन्न गठबंधन विन्यासों में वैधता बनाए रखने में सक्षम रहे। यह व्यक्तिगत वैधता अक्सर गठबंधनों के भीतर वैचारिक असंगति की भरपाई करती थी और शासन की निरंतरता बनाए रखने में मदद करती थी। साथ ही, गठबंधन राजनीति का निजीकरण राज्य में संस्थागतकरण और लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा के दीर्घकालिक स्वास्थ्य के बारे में मानक चिंताएँ पैदा करता है।

## 2. वैचारिक ढाँचाः राजनीतिक स्थिरता और शासन

### 2.1 राजनीतिक स्थिरता

राजनीतिक स्थिरता का मतलब है सरकारों का टिकाऊपन, राजनीतिक प्रक्रियाओं में पूर्वानुमान, नेतृत्व की निरंतरता, और बार–बार सत्ता परिवर्तन या संवैधानिक संकटों का अभाव। भारतीय राज्यों के संदर्भ में, राजनीतिक स्थिरता अक्सर गठबंधन प्रबंधन, नेतृत्व की वैधता और चुनावी प्रदर्शन पर निर्भर करती है। स्थिरता का मतलब ज़रूरी नहीं कि संघर्ष का अभाव हो, बल्कि राजनीतिक संस्थानों की संघर्षों को बिना सिस्टम के टूटे प्रबंधित करने की क्षमता है।

### 2.2 शासन के परिणाम

शासन के परिणामों में प्रशासन की गुणवत्ता, नीति कार्यान्वयन, सेवा वितरण, कानून का शासन, जवाबदेही तंत्र और विकासात्मक प्रदर्शन शामिल हैं। सुशासन आमतौर पर पारदर्शिता, जवाबदेही, दक्षता और समावेशिता

से जुड़ा होता है। गठबंधन सरकारों में, शासन के परिणाम बातचीत, समझौता और सत्ता–साझेदारी व्यवस्थाओं से तय होते हैं।

### 2.3 भारतीय राज्यों में गठबंधन की राजनीति

1980 के दशक के आखिर से गठबंधन की राजनीति भारतीय लोकतंत्र की एक खास पहचान बन गई है। राज्य स्तर पर, गठबंधन अक्सर वैचारिक तालमेल के बजाय क्षेत्रीय आकांक्षाओं, जातिगत समीकरणों और चुनावी गणित को दर्शाते हैं। विद्वानों का तर्क है कि हालांकि गठबंधन प्रतिनिधित्व बढ़ा सकते हैं, लेकिन वे जवाबदेही और नीतिगत तालमेल को भी कमजोर कर सकते हैं।6

## 3. 2005 से पहले बिहारः राजनीतिक अस्थिरता की पृष्ठभूमि

2005 से पहले, बिहार को व्यापक रूप से पुरानी राजनीतिक अस्थिरता, कमजोर शासन और प्रशासनिक गिरावट से जूझते हुए देखा जाता था। 1990 के दशक की शुरुआत से 2005 तक की अवधि में ये बातें शामिल थीं:

- कानून–व्यवस्था का बार–बार टूटना
- नौकरशाही का राजनीतिकरण
- खराब बुनियादी ढांचा और सामाजिक सेवाएं
- निवेशकों के भरोसे में गिरावट
- विकास की चर्चा पर पहचान–आधारित राजनीति का हावी होना

इस दौर में सरकारें अक्सर पूरे कार्यकाल को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए संघर्ष करती थीं, जिससे नीतिगत असंगति और संस्थागत क्षरण हुआ। 2005 के बाद हासिल राजनीतिक स्थिरता के महत्व को समझने के लिए यह ऐतिहासिक संदर्भ आवश्यक है।

## 4. नीतीश कुमार का उदय और गठबंधन शासन (2005–2010)

### 4.1 2005 का चुनावी जनादेश

2005 के बिहार विधानसभा चुनाव एक महत्वपूर्ण मोड़ थे। जनता दल (यूनाइटेड) ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के तहत गठबंधन करके स्पष्ट बहुमत हासिल किया। नीतीश कुमार ने एक मजबूत विकास–उन्मुख जनादेश के साथ पदभार संभाला, जिसमें शासन सुधार, कानून के शासन और प्रशासनिक दक्षता पर जोर दिया गया।7

### 4.2 कानून–व्यवस्था बहाल करना

सबसे शुरुआती और सबसे महत्वपूर्ण शासन परिणामों में से एक कानून–व्यवस्था की बहाली थी। सरकार ने अपराध के प्रति शून्य–सहिष्णुता का दृष्टिकोण अपनाया, पुलिसिंग को मजबूत किया और न्यायिक प्रक्रियाओं में तेजी लाई। इस बदलाव ने राज्य संस्थानों में जनता का विश्वास बढ़ाया और विकास के लिए अनुकूल माहौल बनाया।

### 4.3 प्रशासनिक सुधार

शुरुआती गठबंधन सरकार ने नौकरशाही अनुशासन, योग्यता–आधारित नियुक्तियों और बेहतर सेवा वितरण पर ध्यान केंद्रित किया। नियमित निगरानी तंत्र, समीक्षा बैठकें और प्रदर्शन बेंचमार्क ने प्रशासनिक मजबूती में योगदान दिया।

## 5. मजबूती और निरंतरता (2010–2015)

### 5.1 चुनावी पुष्टि और स्थिरता

2010 के विधानसभा चुनावों ने एनडीए के जनादेश की पुष्टि की, जिससे राजनीतिक स्थिरता बढ़ी। नेतृत्व की निरंतरता ने दीर्घकालिक योजना और नीति कार्यान्वयन को सक्षम बनाया।

### 5.2 इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट

सड़क निर्माण, ग्रामीण कनेक्टिविटी, बिजलीकरण और सार्वजनिक इमारतों में महत्वपूर्ण निवेश किया गया। बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर इस चरण के सबसे ज़्यादा दिखने वाले गवर्नेंस नतीजों में से एक बन गया।

### 2.3 भारतीय राज्यों में गठबंधन की राजनीति

1980 के दशक के आखिर से गठबंधन की राजनीति भारतीय लोकतंत्र की एक खास पहचान बन गई है। राज्य स्तर पर, गठबंधन अक्सर वैचारिक तालमेल के बजाय क्षेत्रीय आकांक्षाओं, जातिगत समीकरणों और चुनावी गणित को दर्शाते हैं। विद्वानों का तर्क है कि हालांकि गठबंधन प्रतिनिधित्व बढ़ा सकते हैं, लेकिन वे जवाबदेही और नीतिगत तालमेल को भी कमजोर कर सकते हैं।[8]

## 3. 2005 से पहले बिहारः राजनीतिक अस्थिरता की पृष्ठभूमि

2005 से पहले, बिहार को व्यापक रूप से पुरानी राजनीतिक अस्थिरता, कमजोर शासन और प्रशासनिक गिरावट से जूझते हुए देखा जाता था। 1990 के दशक की शुरुआत से 2005 तक की अवधि में ये बातें शामिल थीं:

- कानून–व्यवस्था का बार–बार टूटना
- नौकरशाही का राजनीतिकरण
- खराब बुनियादी ढांचा और सामाजिक सेवाएं
- निवेशकों के भरोसे में गिरावट
- विकास की चर्चा पर पहचान–आधारित राजनीति का हावी होना

इस दौर में सरकारें अक्सर पूरे कार्यकाल को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए संघर्ष करती थीं, जिससे नीतिगत असंगति और संस्थागत क्षरण हुआ। 2005 के बाद हासिल राजनीतिक स्थिरता के महत्व को समझने के लिए यह ऐतिहासिक संदर्भ आवश्यक है।

## 4. नीतीश कुमार का उदय और गठबंधन शासन (2005–2010)

### 4.1 2005 का चुनावी जनादेश

2005 के बिहार विधानसभा चुनाव एक महत्वपूर्ण मोड़ थे। जनता दल (यूनाइटेड) ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के तहत गठबंधन करके स्पष्ट बहुमत हासिल किया। नीतीश कुमार ने एक मजबूत विकास–उन्मुख जनादेश के साथ पदभार संभाला, जिसमें शासन सुधार, कानून के शासन और प्रशासनिक दक्षता पर जोर दिया गया।[9]

### 4.2 कानून–व्यवस्था बहाल करना

सबसे शुरुआती और सबसे महत्वपूर्ण शासन परिणामों में से एक कानून–व्यवस्था की बहाली थी। सरकार ने अपराध के प्रति शून्य–सहिष्णुता का दृष्टिकोण अपनाया, पुलिसिंग को मजबूत किया और न्यायिक प्रक्रियाओं में तेजी लाई। इस बदलाव ने राज्य संस्थानों में जनता का विश्वास बढ़ाया और विकास के लिए अनुकूल माहौल बनाया।[10]

### 4.3 प्रशासनिक सुधार

शुरुआती गठबंधन सरकार ने नौकरशाही अनुशासन, योग्यता–आधारित नियुक्तियों और बेहतर सेवा वितरण पर ध्यान केंद्रित किया। नियमित निगरानी तंत्र, समीक्षा बैठकें और प्रदर्शन बेंचमार्क ने प्रशासनिक मजबूती में योगदान दिया।

## 5. मजबूती और निरंतरता (2010–2015)

### 5.1 चुनावी पुष्टि और स्थिरता

2010 के विधानसभा चुनावों ने एनडीए के जनादेश की पुष्टि की, जिससे राजनीतिक स्थिरता बढ़ी। नेतृत्व की निरंतरता ने दीर्घकालिक योजना और नीति कार्यान्वयन को सक्षम बनाया।

### 5.2 इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट

सड़क निर्माण, ग्रामीण कनेक्टिविटी, बिजलीकरण और सार्वजनिक इमारतों में महत्वपूर्ण निवेश किया गया। बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर इस चरण के सबसे ज़्यादा दिखने वाले गवर्नेंस नतीजों में से एक बन गया।

## 6. निष्कर्ष

नीतीश कुमार के गठबंधन शासन के तहत 2005 से 2025 तक की अवधि बिहार में राजनीतिक स्थिरीकरण का एक महत्वपूर्ण चरण है। गठबंधन शासन ने प्रशासनिक निरंतरता और नीति कार्यान्वयन को सक्षम बनाया,

जिससे कानून और व्यवस्था, बुनियादी ढांचे और कल्याणकारी योजनाओं के वितरण में मापने योग्य सुधार हुए। हालांकि, गठबंधन की राजनीति की सीमाओं– नीतिगत समझौते, शासन की थकान और संरचनात्मक आर्थिक चुनौतियों– ने गहरे बदलाव को सीमित कर दिया। बिहार का अनुभव गठबंधन–संचालित लोकतंत्रों में राजनीतिक स्थिरता और शासन परिणामों के बीच जटिल संबंध को रेखांकित करता है और भारत में क्षेत्रीय राजनीति के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करता है।

## Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

### संदर्भ


1. चक्रवर्ती, बी. (2014). स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति और समाज, रूटलेज, नई दिल्ली, पृ. 124
2. जैफरेलॉट, सी. (2012). भारत में धर्म, जाति और राजनीति, प्राइमस बुक्स, नई दिल्ली, पृ.66
3. वही, पृ. 69
4. कुमार, एस. (2018). बिहार में शासन सुधार और विकास, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 53(12), 45–53।
5. मनोर, जे. (2013). भारत में लोकतांत्रिक शासन, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 91
6. वही, पृ. 92
7. वही, पृ. 94
8. पाई, एस. (2019). भारत में गठबंधन की राजनीति और राज्य शासन, जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 42(3), 40–418।
9. शर्मा, ए. (2020). बिहार में राजनीतिक नेतृत्व और विकास विमर्श, इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 81(2), 233–248।
10. यादव, वाई. (2016). राज्य की राजनीति और गठबंधन की मजबूरियां। सेमिनार, 681, 24–30।


### Cite this Article-

*'चंद्रशेखर प्रसाद सिंह; प्रो० डॉ० रंजीत कुमार', 'नीतीश कुमार के गठबंधन शासन के तहत राजनीतिक स्थिरता और शासन के परिणाम (2005–2025)' ResearchNext International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3107-9725 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.*

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."